'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ५५ | वाराणसी, शनिवार, ९ मई, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन — तिरेडी (पंजाब) २६-४-'५९

उठो, जागो और काम में लगो

"ग्राम-स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हमें प्राप्त करना है। लोग जब तक खुद-ब-खुद जाग नहीं जाते, तब तक यह काम नहीं हो सकता। इसलिए मैं चाहता हूँ कि गाँव-गाँव के लोग उठ खड़े हों और यह संकल्प करें कि हम अपनी योजना अपने आप बनायेंगे, अपना काम खुद करेंगे। श्रम करने में गौरव समझेंगे और ग्राम-स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे।"

रामजी को बंदर मिले थे। सुग्रीव ने सीता की खोज करने का वादा किया, लेकिन उसके बाद चार महीना कुछ काम नहीं किया। जैसे बाबा को वादा करनेवालों का अनुभव आता है, ठीक वही अनुभव रामजी को भी आया। रामजी ने लक्ष्मण से कहा कि 'जरा जाकर देखो तो सुग्रीव क्या करता है।' लक्ष्मण ने हाथ में धनुष उठाया तो रामजी ने कहा कि 'जरा प्यार से बातें करो, गुस्सा मत करो।' हनुमान को इसका पता चला। वह सुग्रीव के पास दौड़ा-दौड़ा गया और उससे कहा कि लक्ष्मण आने से पहले ही राम का काम कर दो। तब सुग्रीव ने सीताजी को ढूँढ़ने के लिए अपनी सेना भेज दी। जब लक्ष्मण सुग्रीव के पास पहुँचे तो सुग्रीव ने कहा कि 'हम तो विषयों के गुलाम हैं, इसलिए काम को भूल गये थे। लेकिन अभी हनुमान ने याद दिलायी, इसलिए सेना भेज दी।' बड़े-बड़े लोग मेरे पास आकर वादे करते हैं और काम नहीं करते तो भी मैं दुःखी नहीं होता। मैं समझता हूँ कि मीठा बोलते हैं, यही अच्छा है। आखिर मैं किस पेड़ की चिड़िया हूँ, जो वे मेरी बात मानें? मेरे पास लक्ष्मण होता तो मैं भेजता। जब लोग मुझ से पूछते हैं कि आप आठ साल घूमे और कितना घूमोगे? तो मैं कहता हूँ कि रावण से मुक्ति पाने के लिए रामजी को चौदह साल घूमना पड़ा। आखिर मैं तो उनका दास हूँ। मैं सब्र रखता हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह काम होने ही वाला है।

भगवान कब मदद देता है?

मैं सब लोगों से कहता हूँ कि जब आप इसमें लग जायँगे, तो काम बनेगा। लोग कहते हैं कि क्या यह पाँच करोड़ एकड़ का पहाड़ उठाने का काम हम से बनेगा? तो मैं जवाब देता हूँ कि जिस तरह सब के हाथ लगने पर भगवान ने अपनी अँगुली से गोवर्धन पर्वत खड़ा किया, वैसा ही होनेवाला है। आखिर काम तो वह करता है। लेकिन जब वही देखता है कि मेरे प्यारे बच्चे कुछ हलचल करते हैं, तब वह काम करता है। हम हाथ लगाते हैं तो हमारे हाथों से कुछ नहीं होता, फिर भी उससे भगवान को हम पर दया आती है और वह सोचता है कि बच्चे काम कर रहे हैं तो इनकी फजीहत नहीं होनी चाहिए। फिर वह मदद करता है। मालकियत मिटाने की बात इतनी बड़ी चीज है कि क्या वह हम से बनेगी? रावण के सिर्फ दस मुख थे। लेकिन यह तो सहस्रमुखी रावण है, इसलिए यह काम हम से नहीं होनेवाला है। फिर भी जब भगवान देखेगा कि हम सब ने इसमें अपने हाथ लगाये हैं, तब एक ताकत पैदा होगी, जिससे काम होगा।

उत्तिष्ठत, जाग्रत

भगवान से मेरी प्रार्थना है कि वह मेरी वाणी में ताकत दे, हृदय में शुद्धि दे, उसका स्पर्श सब को हो और सब को लगे कि हम इस काम में योग दें। विनोबा पर उपकार करने के लिए नहीं, बल्कि अपने लिए ही योग दें। अगर हम इसमें योग न देंगे तो बाबा अकेला ही चलेगा। रवीन्द्रनाथ ने गीत लिखा है "एकला चलो, एकला चलो, ओ अभागा।" मैं वही गीत गाता हूँ, लेकिन कहता हूँ, "एकला चलो, एकला चलो, ओ भाग्यवान।" मुझे तो अकेले चलने में आनन्द मालूम होता है। लेकिन आप सब को सोचना चाहिए कि आखिर मैं तो पंजाब के बाहर का मनुष्य हूँ। क्या बाहरी मनुष्य पंजाब का मसला आपकी मदद के बिना हल कर सकेगा? उसे यह तमन्ना है कि यहाँ का मसला हल हो और आप पंजाब के लोग बैठे रहें तो क्या यह शोभा देगा? इसीलिए मैं सब का आवाहन करता हूँ कि आप सब जाग जायें और इस काम में योग दें। ◆◆◆

[गतांक से समाप्त]

प्रार्थना प्रवचन

मोहमिया (पंजाब) २०-४-'५९

मेरा जन्म मालिकी मिटाने के लिए ही हुआ है

आज सुबह हमने कहा था कि यहाँ आज ऐसा कुछ काम होना चाहिए, जिससे कि यहाँ के गरीबों को यह महसूस हो कि गाँववाले अपने दुःख में हमदर्दी रखते हैं। ऐसा अगर न किया हो, तो भगवान आपको वह करने की प्रेरणा देगा, ऐसा मुझे विश्वास है।

भगवान भक्त को बचाता है

दुनिया में जितने अच्छे काम होते हैं, वे ईश्वर ही कराता है। जितने बुरे काम होते हैं, वे मनुष्य करते हैं। ईश्वर पर भरोसा रखकर आठ साल से यात्रा चल रही है। बिल्कुल बेपरवाह होकर हम घूम रहे हैं। अब यह यात्रा पंजाब में चलती है। हमें यह विश्वास है कि भक्त की फजीहत भगवान नहीं चाहता है। हम काम करते हुए अगर निष्फल हो जायेंगे तो भगवान की फजीहत होगी। इसलिए उसके बारे में हम बिल्कुल बेपरवाह हैं।

आज बहन अमतुस्सलाम से बातें हो रही थीं। वह बापू की लड़की है, मैं भी बापू का लड़का हूँ। उनका और हमारा बहुत पुराना संबंध है। मैंने उनसे कहा है कि पंजाब से मुझे तीन हजार शांति-सैनिक मिलने चाहिए। इस पर वह कहने लगी कि खादी कार्यकर्ताओं को इसके लिए प्रेरणा देनी चाहिए कि वे भी शांति-सेना का काम करें। मैंने कहा कि मैं तो किसी को रोकता नहीं हूँ। आठ साल से मैं कह रहा हूँ, लेकिन देखता हूँ कि रचनात्मक कार्यकर्ता अपने काम में गिरफ्तार हुए हैं। मशगूल नहीं कहता हूँ, गिरफ्तार कहता हूँ। मशगूल और गिरफ्तार में फर्क है। मशगूल तो उसे कहते हैं कि एक काम में से जहाँ अनेक काम निकलते हैं। जैसे बीज बोया जाता है तो पेड़, पत्ती, फूल, फल उसमें से निकलता है, वैसे एक काम में से अनेक काम निकलते हैं, वहाँ हम मशगूल कह सकते हैं। उसकी मिसाल देनी है तो मेरा काम उसकी मिशाल हो सकता है और गिरफ्तार याने एक ही काम जीवन भर करना। जिसमें दूसरे काम नहीं निकलते हैं। याने एक जरिया तय हो गया, महदूद हो गया। दुनिया में क्या चल रहा है और क्या नहीं, कुछ मालूम नहीं है। बाहर न देखते हुए अपने काम करते जाते हैं। सरकार से मदद मिलती है, उसके आधार से काम करते हैं। खादी के काम को सरकार मदद देना चाहती है और वह मदद ली जाती है। लेकिन लोक-शक्ति के बिना उस काम की बुनियाद खड़ी नहीं हो सकती है। बुनियाद के बिना जो इमारत होती है, वह हवा का जरा सा झोंका आया कि गिर जाती है। वैसे ही लोक-शक्ति जगाये बिना कोई भी काम करेंगे, तो वह नहीं टिकेगा। हमारी बातें सुनकर उसने कहा कि यह बात ठीक है। आज तक हमने काम नहीं किया है। अब करेंगे। खैर, आठ साल के काम के बाद अन्तुस्सलाम को काम की प्रेरणा मिलती है तो बहुत बड़ा काम वह यहाँ कर सकती है।

ग्रामदान रचनात्मक कामों की बुनियाद है

कोई भी अच्छा काम करना होता है तो अहंकार छोड़कर करना चाहिए। काम हम नहीं करते हैं, भगवान कर रहा है—यह भावना होनी चाहिए। हमारे काम में राजनैतिक पार्टीवालों ने मदद दी है। कुछ लोगों ने उन पार्टियो में रहकर मदद दी है तो कुछ लोगों ने पार्टी छोड़कर आकर मदद दी है। लेकिन अभी तक हमें रचनात्मक कार्यकर्ता नहीं मिले। वे समझते हैं कि बापू ने जो बीस काम हमें बताये थे, उसमें से यह भी एक इक्कीसवाँ कार्यक्रम है। हमारा यह काम सारे रचनात्मक काम की बुनियाद है और इसके बिना रचनात्मक काम पोला होगा, यह सूझने में उनको जरा देर लगी है। इसलिए वे समझते थे कि हरिजन-सेवा, खादी, ग्रामोद्योग की भाँति ही विनोबा का भी यह एक काम है।

इन दिनों पिछड़े हुए कहलाना भी सौभाग्य माना जाता है। यहाँ तक कि अब ब्राह्मणों को यह अफसोस रहता है कि उनको पिछड़ा हुआ नहीं माना जाता। और अलग स्कॉलरशिप वगैरह नहीं दी जाती। मेरे कहने का मतलब यह है कि अछूतों की सेवा हम करते हैं, यह ख्याल रखेंगे तो यह छूत-अछूत भेद नहीं मिटेगा। इसलिए टुकड़ों की सेवा नहीं करनी है। कुल गाँव को ग्राम-स्वराज्य में परिवर्तित करेंगे, तभी समग्र सेवा होगी। फिर हरिजन-परिजन भेद नहीं रहेगा। किसी भी तरह का पंथ-भेद धर्म-भेद नहीं रहेगा। पढ़े-लिखे, अपढ़, अनेक पंथवाले, सब लोग एक साथ होंगे और उन सबकी ताकत का उपयोग किया जायगा। तभी गाँव का काम होगा। इसलिए ग्रामसभा गाँव की शक्ति का जिम्मा उठायेगी। समाज-सुधार होगा। आर्थिक सवाल हल होगा। भौतिक उन्नति होगी। कबीर ने कहा है 'एक ही साधे सब सधे।' वैसे ही एक काम से अनेक काम सधेंगे।

यवतमाल से सबक लें !

अभी पं० नेहरू को महाराष्ट्र के यवतमाल जिले ने आमंत्रण दिया था। वहाँ एक लाख एकड़ जमीन प्राप्तकर उसका बँटवारा करने का संकल्प किया गया था। १८ तारीख को यह कार्य संपन्न हुआ। याने यह दिन भू-दान का है। उसी दिन भूदान-यज्ञ शुरू हुआ है। १६ तारीख को मुझे टेलीग्राम मिला है कि ३० हजार एकड़ जमीन मिली है, ५० हजार बाँटी गयी है। जब १८ तारीख तक एक लाख एकड़ नहीं हुई होगी तो भी ८० हजार एकड़ जमीन की प्राप्ति और ५० हजार एकड़ का बँटवारा होगा। *यह कोई छोटी बात नहीं है। पं० नेहरू को बुलाया। उस निमित्त सब लोगों ने मिलकर ताकत लगायी। पंजाब का कोई जिला पंडित नेहरू को बुलाये तो क्या यहाँ काम नहीं हो सकेगा? उसके लिए निश्चय होना चाहिए। यवतमाल जिलेवालों ने एक निश्चय कर लिया था, संकल्प कर लिया था और उस मुताबिक सब तरह की शक्ति वहाँ लगी। प्रान्तभर के लोग वहाँ गये। मंत्री गये, दिल्ली के लोग भी गये। भजन-टोलियाँ भी गयीं, भूदान-सेवक तो थे ही, इस तरह सब लोग बराबर जुट गये। कोई महान पुरुष आया है, इसलिए काम हुआ, ऐसा नहीं। एक संकल्प वहाँ हुआ था। मैं कहना चाहता हूँ कि यवतमाल जैसे एक छोटे से जिले में—जहाँ सब सेवक जुट जाते हैं—७० हजार एकड़ जमीन मिलती है, २५ हजार सर्वोदय-पात्र होते हैं, यह संकल्प का परिणाम है। १८ तारीख तक संकल्प पूरा करने का निश्चय यवतमाल जिले के कार्यकर्ताओं ने किया था।

भगवान ने कहा है कि आपका संकल्प कैसा है? अगर सत्य है तो वह जरूर पूरा होगा। भगवान हमेशा सत्य संकल्प में मदद देता है। और उससे सारे भेद मिट जाते हैं। भगवान ने गीता में कहा है, आत्मा कैसा है? 'सत्यकामः सत्यसंकल्पः।'

* एकलाख चार हजार चार सौ एकसीत एकड़ भूमि वहाँ प्राप्त हुई, जो बीस सर्कल के आदाताओं के बीच वितरित कर दी गई। पं० नेहरू ने आदाताओं को प्रमाण-पत्र दिये। सं०]

भगवान ऐसे संकल्प में मदद देता है। फिर उसमें सारे भेद मिट जाते हैं। सुलगती हुई आग में बबूल, आम या चन्दन की लकड़ी डालो, तो सबकी अग्नि होगी। आम और चन्दन का भेद तब तक रहेगा, जब तक वह अग्नि में नहीं डाली जाती। इसी तरह पार्टी के, जाति के, धर्म के, पंथ के भेद तब तक रहेंगे, जब तक कि एक संकल्प करके काम में नहीं लग जाते हैं। अपने पक्ष को भूलकर जो संकल्पसिद्धि के लिए काम में लग जाते हैं, उनका बेड़ा पार है। इसलिए हमें एक सत्य संकल्प करना है और सब तरह के भेदों को भूलकर इस काम में लगना है।

शब्दशक्ति ब्रह्मशक्ति है

अब हमने जय-जगत् का नारा लगाया। बच्चा-बच्चा उसे याद करता है। दुनिया में जो काम होते हैं, वे शब्द से होते हैं। शब्द की शक्ति बहुत बड़ी है। शब्द का उच्चारण करने की हम हिम्मत नहीं करते हैं। बाबा ने शब्द का ही उच्चारण किया और कहा कि सारे हिन्दुस्तान में जब तक ग्राम-स्वराज्य की स्थापना नहीं होती है, तब तक अगर पाव नहीं टूटें तो यात्रा जारी रहेगी। यह बल बाबा के पास कहाँ से आया? शब्द बोला जाता है तो वाणी में ताकत आ जाती है। सबकी शक्ति उसमें दाखिल हो जाय तो काम हो जाता है। कभी-कभी गलत शब्द भी काम करता है। इसलिए गांधीजी को बड़ी चिन्ता थी। जैसे पिता चिन्ता करता है, वैसी ही उनकी चिन्ता थी कि जहाँ स्वराज्य-प्राप्ति हुई है, दूसरा कौन सा शब्द हमारे लिए प्रेरणाप्रद होगा। 'सर्वोदय' यह एक नया शब्द उन्होंने तैयार कर रखा था। ताकि स्वराज्य-प्राप्ति के बाद नयी चेतना, नयी प्रेरणा, नयी स्फुरणा देश को मिले।

जहाँ एक मन्त्र की सिद्धि हुई है, वहाँ भोग आता है और पुण्य का क्षय होता है, यही हमने जापान में देखा, इटली में देखा। बचपन में जापान का हम बहुत गौरव करते थे। परन्तु जब वहाँ स्वराज्य आया, वहाँ भोग शुरू हुआ। इटली में मैझिनी, गैरिबाल्डी ने देश की आजादी के लिए बहुत कोशिश की। इटली आजाद हुआ, और फिर वही साम्राज्यवादी बन गया। मतलब यह कि नया मंत्र नहीं मिलता है तो गिरावट शुरू हो जाती है। जैसे पूर्णिमा के बाद चन्द्र का क्षय होता है, वैसे ही एक की सिद्धि के बाद दूसरा मन्त्र न हो, वहाँ गिरावट शुरू होती है, ह्रास होता है, देश क्षीण हो जाता है। इसलिए शास्त्रकारों ने कहा है कि सबसे महत्त्व की चीज है—शब्द। शब्द का बहुत महत्व है, वह प्रेरणादायी होता है। पंजाबवालों को सर्वोदय का शब्द मिला है, अब उसका उपयोग वे करें।

'हुक्मरजाई चल्लणा'

महंमद को एक बार एक सवाल पूछा गया था। उसने कहा कि इसका जवाब मैं कल दूँगा। परन्तु उसे दूसरे दिन जवाब नहीं सूझा। वह सोचने लगा कि ऐसी क्या बात हुई कि मुझे जबाब नहीं सूझ रहा है। तब उसके ध्यान में आया कि मैंने ऐसा नहीं कहा है कि अगर अल्लाह ने चाहा तो मैं कहूँगा। यह बात उसके ध्यान में आ गयी। 'हुक्मरजाई चल्लणा नानक लिखिया नाल' सारा काम उसके हुक्म से चलता है, ऐसा विश्वास होगा तो परमेश्वर की ताकत प्रकट होगी। परमेश्वर याने क्या? बिजली जैसा वह अव्यक्त रहता है। जहां बटन दबाया, वहां बिजली प्रगट होती है। ईश्वर अप्रकट, अव्यक्त है। बटन दबाने के बाद बंदे के रूप में प्रकट होता है। ईश्वर का बन्दा याने उसी का एक रूप है। राम से बढ़कर राम के दास हैं, ऐसा कवि लिखता है। "घट-घट में साई रमता" हिन्दुस्तान में हर कोई कहेगा कि घट-घट में परमेश्वर विराजमान है, लेकिन वह बिजली जैसा है। आप बटन नहीं दबायेंगे, तो वह प्रकट कैसे होगा? इतनी बुराइयाँ, इतने पाप चलते हैं। क्या परमेश्वर की हाजिरी में पाप चल सकते हैं?

एक मित्र ने मुझे एक किस्सा सुनाया। उसके मन में स्वप्न में बुरी भावनाएँ पैदा हुई। लेकिन मां सामने आयी तो बुरे विचार हट गये। मान लीजिये कि यहाँ ईश्वर प्रकट है, ऐसा हम मानेंगे तो बुरे काम नहीं करेंगे। आग है, लेकिन वह गुप्त रूप में है। वैसे ही परमेश्वर दुनिया में भरा है, लेकिन गुप्त रूप में है। लेकिन बन्दा, भक्त जहाँ प्रकट हुआ, वहाँ उसका एक रूप प्रकट हुआ। वह छोटासा रूप है। लेकिन वह है रूप और जो बड़ा है, वह अरूप है, वह सम्राट् है। बन्दा प्रकट है, इसीलिए राम से राम के दास को बढ़कर बताया गया है।

हजार वर्ष का अन्धेरा : क्षणभर का प्रकाश

हमने भूमि की मालिकी मिटाने का निश्चय किया है अब यह विचार मिथ्या है कि सत्य है, यही देखना होगा। अगर यह मिथ्या बात होगी तो हम कितनी भी कोशिश करते तो भी यह बात नहीं बनती। जमीन हमारी माँ है, जमीन का कोई मालिक नहीं हो सकता है। हम खत्म हो जायेंगे और जमीन यहीं रहेगी। इसी मिट्टी में हमारा शरीर बनता है और इसी में आखिर मिल जाता है। इसलिए हम मालिक हैं, यह मिथ्या वस्तु है। ऐसी हालत में एक सत्य वस्तु छिपी नहीं रहेगी। उसका प्रकाश चारों ओर फैलेगा। अन्धःकार रोशनी को कभी नहीं ढँकेगा। एक गुफा में दस हजार साल का पुराना अन्धेरा है, लेकिन एक लालटेन वहाँ आप ले जाइये, एक क्षण में दस हजार साल का अन्धेरा खत्म हो जाता है। अंधःकार की कोई हस्ती नहीं है, वह ना-चीज है, चीज है प्रकाश। इसलिए अन्धकार का प्रकाश पर आक्रमण नहीं हो सकता है, बल्कि प्रकाश का हमला अन्धकार पर होता है। उसी तरह अच्छाई का हमला बुराई पर होगा। सत्य का असत्य पर होगा। जमीन की मालकियत गलत है, यह सत्य है। इसलिए मालिकी टिक नहीं सकती है। अंग्रेज कहते थे—जहाँ सूर्य है, वहाँ ब्रिटेन का साम्राज्य है। लेकिन एक दिन आया और सूर्य गायब हो गया। १५ अगस्त, १९४७ की रात में सूर्य गायब हो गया। उनको हिन्दुस्तान छोड़ना पड़ा, क्योंकि यह गलत बात थी। उसके लिए समय लगा, यह अलग बात है। लेकिन वह असत्य बात थी, इसलिए नहीं टिक सकी। उसी तरह राजा-महाराजा भी मिट गये। उनकी मालकी नहीं रही। यह तो परमेश्वर की चीज है।

पंजाब में एक बात कम है

पंजाब में "पवन गुरू पाणी पिता, माता धरती मात" ये तीन बातें बोलते हैं, लेकिन पहली दो बातों को मानते हैं, तीसरी बात को नहीं मानते। पवन और पानी की मालिकी नहीं हो सकती।

यद्यपि शहरों में वह भी है। वहाँ ज्यादा हवादार मकान का ज्यादा किराया होता है। परमेश्वर की इच्छा होती तो वह पैसेवालों को दो नाक देता! ज्यादा हवादार मकान पैसेवाला ही ले सकता है, क्योंकि किराया ज्यादा होता है। यह बिल्कुल गलत है। यहाँ खेत में इतनी खुली हवा चलती है। इस हवा का क्या किराया है, यह आप किसान को बतायेंगे तो वह हँसेगा। उसी तरह पानी का भी मीटर रहता है। यह गलत नहीं है, मैं किसी को दोष नहीं देता हूँ, लेकिन जिसके पास ज्यादा

पैसा हो उसको ज्यादा पानी और ज्यादा हवा मिलती है। यही खैरियत है कि देहातवालों के लिए हवा-पानी की मालकियत नहीं रखी। मैं कहता यह चाहता था कि पंजाब में पवन गुरू, पानी पिता यह बात तो मानी है, लेकिन तीसरी बात धरती माता है—यह नहीं मानी है। हम लोग भूमिपति कहलाने में गौरव मानते हैं। लेकिन इससे बदतर बुरी गाली नहीं हो सकती है। मैं तो मानता हूँ कि मेरा जन्म मालिकी मिटाने के लिए हुआ है।

मालिकी मिटाने की बात सब धर्मवालों को मान्य है। ईसा ने भी यह बात बतायी है। ओल्ड टेस्टामेंट में यह बात आती है। गुरुओं ने भी यह कहा है। यह बात हमें सिद्ध करनी चाहिए। अब इसके लिए संकल्प करना चाहिए। हमें देखना चाहिए कि हमारा संकल्प सत्य है या मिथ्या। जमीन की मालिकी गलत नहीं है तो वह नहीं जायगी। और गलत है तो जरूर जायेगी।

अहंकार छोड़कर काम करें

दूसरी बात यह है कि हम अपने अहंकार से इसे उठाते हैं या भगवान के भरोसे। अगर हम अहंकार रखते हैं तो हमें यश नहीं मिलेगा। हमें अहंकार छोड़कर भगवान के भरोसे काम करना चाहिए। इसलिए हमारे काम में कांग्रेसवाला आया तो उसका महत्त्व बढ़ेगा, ऐसा हमें नहीं सोचना चाहिए। नहीं तो जैसे पालिटिशियन होते हैं, वैसे ये एन्टीपालिटिशियन हो जाते हैं। मान लीजिए कि किसी को लाभ मिलता है तो आपका क्या बिगड़ता है? मान लीजिए कि कल मैं इलेक्शन के लिए खड़ा हुआ तो क्या पाप होगा? यह ठीक है कि उससे लेवल नीचे जाता है और लोग कहेंगे कि पहले तो बहुत बड़ी बातें करता था, अब क्या हो गया? शायद मैं पंजाब में खड़ा हो जाऊँ तो लोग कहेंगे कि भाई इसे वोट दे दो ताकि यह अपने पास मालिकी मिटाने के लिए बार-बार नहीं आयेगा।

इसलिए चिन्ता यह होनी चाहिए कि इसमें मुझे यश न मिले और इसमें जो भी आयेगा, उसका स्वागत करना चाहिए।

हमें दो बातें करनी चाहिए। पहला तो सत्य-संकल्प और दूसरा भावना के बल पर काम! ये दो बातें हम करते हैं ऐसा शब्द पंजाब में निकलना चाहिए। "शब्द हजारे" आज ही हमने यह पढ़ा। शब्द की कीमत बहुत बड़ी है। इसलिए इस काम का नित्य निरंतर जप करना चाहिए।

◆◆◆

स्वागत-प्रवचन

जहाजपुर (राज०) १८-२-'५९

राजनीति से लोकशक्ति को भंग न करें

आज हमारा इस जिले का आखिरी पड़ाव है। यहीं पर मेवाड़ समाप्त होता है। १५ जनवरी को हमने राजस्थान में प्रवेश किया था। आज १८ फरवरी है। ३५ दिन मेवाड़ में गये। पाँच हफ्ते हुए और पाँच जिलों में यात्रा चली। बहुत समय एक-एक जिले को मिल गया। यहाँ के पाँच जिलों के भाई और बहनों से हमारा परिचय हुआ और उसका हमारे दिल पर बहुत असर हुआ। हम समझते हैं कि मेवाड़ में प्राण-शक्ति है। लोगों के दिलों में श्रद्धा है। काम करने के लिए जिस प्राण की जरूरत होती है, वह प्राण यहाँ है।

अक्सर देखा जाता है कि जहाँ पढ़ाई ज्यादा होती है, वहाँ के लोगों में प्राण-शक्ति कम होती है। यहाँ भी पढ़ाई कम होगी। जहाँ प्राण-शक्ति है, वहाँ पराक्रम बहुत हो सकता है और पढ़ाई भी हो सकती है। हमारी ये बहनें पढ़ना सीखें और जरूर पढ़ें। मीराबाई के भजन, भगवद्गीता, भागवत ये सारा पढ़ सकती हैं। आजकल स्कूल में जो पढ़ाई होती है, उसमें वे चीजें नहीं रहती हैं। हम चाहते हैं कि रामायण, महाभारत, दादू, नानक, मीराबाई, कबीर इनके भजन गाँव-गाँव में गाये जायँ और पढ़े जायँ। वह पढ़ाई उनकी प्राण-शक्ति को बढ़ानेवाली होगी। आजकल की लड़ाई में प्राण कम होता है। हम चाहते हैं कि सारे जिले में नयी तालीम चले, जिससे लड़के बेकार न बनें। समस्त बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ काम भी करें, और गाँव की दौलत बढ़ायें।

मेवाड़ में प्राण-शक्ति का संचार

डुंगरपुर और बाँसवाड़ा जिले में सौ ग्रामदान अब तक हुए हैं। मेवाड़ में यह हो सकता है। कोई भी घर ऐसा खाली न हो, जहाँ सर्वोदय-पात्र न रखा हो। हजारों घरों में सर्वोदय-पात्र होने चाहिए और हो सकते हैं। करीब हजार घर की बहनें तो यहाँ आयी हैं। इस तरह से इस जिले में सर्वोदय-पात्र का कार्यक्रम पूरा होना चाहिए। यहाँ कुछ कार्यकर्ता नयी तालीम के प्रयोग कर रहे हैं। सर्वोदय-पात्र का कार्यक्रम सफल होने से उसमें भी अच्छी गति होगी। खादी का काम तो यहाँ बहुत ही हो सकता है। इस कार्य को प्रेम से उठानेवाले सेवक मिलेंगे तो मेवाड़ में बहुत काम हो सकता है। मेवाड़ से शांति-सैनिकों और सेवकों की मैं बहुत अपेक्षा करता हूँ।

आज यहां पर एक बहादुर कौम के लोगों से भेंट हुई। वे पहले अंग्रेजों की सेवा में रहते थे। लोगों का बचाव करने के लिए सेवा में भरती होते थे। हम चाहते हैं कि अब वे नया पराक्रम करें। हजार घर के साथ अपना परिचय रखें, उनकी सेवा करें। हर घर में क्या खामी है, क्या खूबी है—यह देखें। खामियों को दूर करने की तरकीब निकालें। खूबियों को बढ़ाने की युक्ति खोज निकालें, दुःख दूर करें, यह सारा काम करना है। इस तरह काम करनेवाला एक सेवक, एक भगत, एक सैनिक एक हजार घर के लिए मिलना चाहिए। मेवाड़ में पाँच जिले मिलकर चालीस लाख लोग हैं। उनकी सेवा के लिए आठ सौ सेवक, शांति-सैनिक मिलने चाहिए। उनकी तालीम का इन्तजाम, उनका मार्गदर्शन वगैरह हम करें तो वे सारे मेवाड़ में फैल जाते हैं, ऐसी योजना यहाँ हो सकती है। उससे आप देखेंगे कि सारे मेवाड़ में एक प्राण-शक्ति संचार करेगी और भारत का नकशा बदल जायगा।

यही वह प्रदेश है, जहाँ हजार-हजार साल तक आजादी के लिए लड़ाइयां हुईं और वीरों ने खून बहाया। ऐसी पराक्रमी भूमि में ग्रामदान खूब होने चाहिए। हवा, पानी जैसे जमीन भी सबकी है—यही समझ कर बाँट के खायें, मिल-जुल के रहें, गांव-गांव में झगड़े न होने दें। इस तरह से ग्रामदान के आधार पर ग्राम-स्वराज्य की स्थापना और आठ सौ सैनिकों की सेना खड़ी कर दें। समय आया तो जान खतरे में डालकर सेवा करने के लिए तैयार होना पड़ेगा। इस तरह की सेना में भर्ती होने के लिए अभी यहाँ पाँच सेवक मिले हैं। जहाँ हम आठ सौ की अपेक्षा करते हैं, वहां अभी तक एक दशांश भी काम नहीं हुआ है। हाँ, काम का आरम्भ हो गया है। हमें आशा है कि यह काम आगे बढ़ेगा।

लोकशक्ति की योजना

हमारे बड़े-बड़े लोग भी सैनिक होने के काबिल हैं। जो लोग पुराने हो गये हैं, उनका आशीर्वाद हम प्राप्त करें। हमारी कुल योजना सरकार की शक्ति के अलावा जनता की शक्ति प्रकट करने की है। अगर वह पूरी तरह से सफल होती है तो इस काम से एक चमत्कार हो सकता है। जनता की तरफ से कुछ काम होना चाहिए, ताकि गाँव में स्वराज्य आ जाय और सरकार का बोझ कुछ कम हो। गाँव-गाँव के लोग अपना कारोबार देखें। रक्षण, शिक्षण पोषण की जिम्मेवारी उठायें। इस तरह भारत का एक सुंदर चित्र हम दिखा सकते हैं। अब तक लोगों की तरफ से कोई आशाजनक काम नहीं हुआ है। यह काम सत्ता के जरिये नहीं होगा, सेवा के जरिये होगा। चाहे सरकार की मदद इसमें मिले, परन्तु मुख्य काम जनता का ही होगा और यह पराक्रम हमें करना होगा। इतना हम करते हैं तो मैं आशा करता हूँ कि मेवाड़ से नया पराक्रम फूट निकलेगा। एक बार मेवाड़ ने भारत को बचाया है और अब दुबारा भी बचा सकता है।

यहाँ की जनता में इतनी श्रद्धा है कि वह अपने आदर्शों की रक्षा के लिए जान की बाजी लगा देती है। उसके पास ज्यादा बुद्धि नहीं है। बुद्धि याने मिथ्या क्या है, झूठ क्या है—यह पहचान है, परन्तु उसकी परख अभी दीख नहीं पड़ी है। विवेक-बुद्धि हो सारासार विवेक हो, जो सच्ची बात है, वह मालूम होने पर उस पर अमल करें। जैसे परींदों के दो पंखे होते हैं, उस तरह से बुद्धि और श्रद्धा ये दो पंख हैं और दो में से एक भी कम हो जाय तो अच्छी उड़ान नहीं हो सकती। इसलिए जरूरत दोनों की है। विवेकबुद्धि हरएक के पास हो और हरएक के हृदय में श्रद्धा हो तो सच्ची राह निकलेगी। उस पर बराबर मजबूत कदम रखते चले जायँ, यही हम चाहते हैं।

हमें खुशी है कि आपके गाँव में भाई-बहन बड़ी श्रद्धा से हमारे विचार सुनने के लिए आये हैं। यह देखकर ऐसी आत्म-निष्ठा व आत्म-विश्वास पैदा होता है कि हम करेंगे तो भारत का बेड़ा पार है। स्वराज्य प्राप्त हुए ११ साल हुए। अंग्रेजों का बोझ हट गया। बाद राजा-महाराओं का बोझ था, वे भी चले गये। दोनों बोझ हट गये। बहुत बड़ा काम भारत में हुआ। प्रजा के हाथों में सत्ता आ गयी। अब हम अपना काम स्फूर्ति से, तेजी से कर सकते हैं।

पुराने खयाल छोड़िये

हमारे सामने जमीन का जो अहम मसला है, वह हल करना होगा। मालकियत भगवान की है। हम मालिक नहीं हैं। सारी जमीन गाँव की हो, यह चीज अगर हम करते हैं तो गाँव-गाँव अपने पाँव पर खड़े हो सकते हैं। उसके बाद गाँव में विज्ञान का प्रवेश होगा। लोग पूछते हैं कि सर्वोदय के लोग विज्ञान कहाँ तक चाहते हैं? हम कहते हैं कि सर्वोदयवालों का विज्ञान पर सब से अधिक अधिकार है। अब यह जानकी देवी बहनों को कहती है कि परदा हटाओ, घूँघट छोड़ो। यह निकम्मी चीज है और पुरानी चीज है। अपनी हिन्दुस्तान की चीज है ही नहीं। कबीर ने तो कह दिया है 'घूँघट का पट खोल, तोहे राम मिलेंगे'। यह परदा तो ऐसे ही टूटनेवाला है। गाँव-गाँव के लोगों को यह तालीम मिलेगी तो यह काम होगा। जहाँ विज्ञान आया वहाँ ये पुराने खयाल रहेंगे तो राष्ट्र को कमजोर कर देंगे।

आज एक भाई पूछते थे कि अछूतों के लिए क्या किया जाय? हमने कहा कि हम अछूत हैं, यह मानना छोड़ दें। हम आदमी हैं, इन्सान हैं, ऐसा समझें। इतना हो जाता है तो हरिजन-परिजन भेद नहीं टिकेगा। विज्ञान खूब फैलना चाहिए, परंतु विज्ञान का लाभ तब होगा, जब गाँव की जमीन गाँव की होगी। विज्ञान के सारे तरीके गाँव में आ सकते हैं और उससे हिंदुस्तान में चार गुना उपज बढ़ सकती है। चीन में जो खेती होती है, उसमें एक ही एकड़ में यहाँ से चार गुना उपज होती है। यह सारा हमें सीखना होगा और ढंग से खेती करनी होगी। यह तभी होगा, जब विज्ञान का प्रवेश गाँव में होगा। विज्ञान की सहूलियत गाँव-गाँव में मिलनी चाहिए। इसलिए अगर गाँव में अलग-अलग मालिक रहेंगे तो बहुत मुश्किल होगी।

गाँव में आग न लगाइये

लोगों को जो चाह है, वह नयी चीज सुनने की है। इस समय अगर सब के सब राजनैतिक पक्ष के लोग, रचनात्मक कार्यकर्त्ता और सरकार के लोग—ये तीनों लोक-सेवक बनते हैं तो गाँव-गाँव में बहुत काम हो सकता है। हमारी यह कोशिश है कि तीनों एक हो जायँ। राजस्थान में आज जो चल रहा है, वह देखकर लगता है कि निकम्मी राजनीति से लोगों का समाधान नहीं होगा। एक ताकत से दूसरी ताकत टकराती है और टूट रही है। इस तरह ताकत खर्च करने से जो निकम्मे गये-बीते लोग हैं, उनकी ही चलती है। हम कहना चाहते हैं कि इन लोगों के दिन लद गये। ये खंडहर हो गये हैं। अब नहीं टिक सकते हैं। राजनीति के कीचड़ में पड़े हुए लोग कुछ काम नहीं कर सकते हैं। ऐसे जलील लोगों की इज्जत नहीं रहेगी। उनकी इज्जत तोड़ने का काम सर्वोदय द्वारा हुआ तो वे लोग सर्वोदयवालों को माफ करेंगे। अब तो प्रेम से मिलकर के काम करने के दिन हैं, दिल तोड़ने के दिन नहीं हैं। यह वे जितने जल्दी समझेंगे, मिल-जुल कर प्यार से रहेंगे, उतनी ही इज्जत और लज्जत भी रहेगी। नहीं तो वे इज्जत भी खोयेंगे और लज्जत भी खोयेंगे। इसके आगे ऐसे झगड़नेवाले लोग गाँव-गाँव में लोगों के पास जाकर वोट मांगेगें तो लोग कहेंगे कि तुम यहाँ से चले जाओ। हमारे गाँव को हम आग लगाना नहीं चाहते हैं। हमारे गाँव के टुकड़े हों, यह हम नहीं चाहते हैं। ऐसी ताकत गाँव-गाँव में आनी चाहिए।

कल एक अमेरिकन भाई से बात हो रही थी। मैंने उनको कहा कि आज तक शहरों का असर गाँवों पर रहा। अब मैं गाँवों का असर शहरों पर डालना चाहता हूँ। असल में गाँववालों के पास लक्ष्मी है। दूध, दही, घी, मक्खन इत्यादि सब गाँववालों के पास है। परन्तु गाँववाले लाचार होकर बेचने जाते हैं। शहरवाले कहते हैं कि भाव हमारे हाथों में है। जब ये मेहनत और मशक्कत करते हैं तो इनको लाचार नहीं होना चाहिए। देहात के लोग हिम्मती बनें, यह हम चाहते हैं।

जीर्ण-शीर्ण नेतृत्व नहीं चलेगा

अब गया-बीता, टूटा-फूटा निकम्मा नेतृत्व नहीं चलेगा। वह पुराना जीर्ण-शीर्ण हो गया है। उसको उठाकर लोग फेंक देंगे और कहेंगे कि हमें ऐसा नेतृत्व नहीं चाहिए। जो एक-दूसरे की निंदा करते हैं, ऐसे नेता हमें नहीं चाहिए। इस तरह जनता हिम्मत के साथ कहेगी, अपने पांव पर खड़ी होगी और सर्वोदय का विचार उठायेगी। यह हमें करना है। हमारे दिल में आग है। कुछ लोग कहते हैं, बाबा तो स्थितप्रज्ञ है, लेकिन स्थितप्रज्ञ के

लक्षण क्या हैं, उसका दिल ठंढा नहीं होना चाहिए, दिमाग ठंढा होना चाहिए। मैं आपसे भी कहना चाहता हूँ कि आपको भी अपना दिल ठंढा नहीं रखना चाहिए, दिमाग ठंढा रखना चाहिए। दिल में आग होनी चाहिए, तड़पन होनी चाहिए। खैर, मैं तो स्थितप्रज्ञ नहीं हूँ, उससे बहुत दूर हूँ। लेकिन उस दिशा में मेरी कोशिश है।

हम अग्नि के उपासक हैं। ऋग्वेद में अग्नि की उपासना का मन्त्र आता है 'अग्निमीले पुरोहितम्'। दिल में अग्नि होना चाहिए और दिमाग में वरुण का राज होना चाहिए। उस आदर्श के पास हम पहुँचना चाहते हैं। लोग हमारी महिमा गाते हैं, लेकिन हमारी कोई हस्ती नहीं है। शंकराचार्य, भगवान गौतम बुद्ध जवानी में घूमते थे। उनके दिल करुणा से भरे हुए थे। उनका भी दिल समाज की बुराई के खिलाफ बगावत से भरा हुआ था। वैसे नेता हमें चाहिए, जो करुणा से भरे हुए हों। लोगों के पास स्वयं पहुँचकर उनसे एकरूप होने की कोशिश करते हों और उनको ज्ञान देते हों। हमें ऐसे पुराने नेता नहीं चाहिए, जिनका मन चंचल है, हृदय मत्सर से भरा है। क्या ऐसे नेता को हम कबूल करेंगे? अगर करेंगे तो हम गढ़े में जायेंगे। आज का नेता स्थितप्रज्ञ ही हो सकता है।

आज मैं रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं को मुर्दों जैसा देखता हूँ, तो चिढ़ जाता हूँ। गांधीजी ने तो कहा था कि सारे लोग टूट पड़ेंगे, लेकिन तुम खड़े रहोगे। गांधीजी जब जेल से बाहर आये थे, तब उन्होंने डाँटा था इन लोगों को कि तुम्हारी खादी टिकेगी, ऐसा मैंने माना था। लेकिन वह भी नहीं टिकी। यह १९४४ की बात है। अंग्रेज सबको दबाना चाहें, तो सब दबेंगे, लेकिन खादी कैसे दबेगी? ऐसा गांधीजी कहते थे। लेकिन रचनात्मक कार्यकर्त्ता फेल हो गये। आज जैसा निकम्मा नेतृत्व लोगों पर लादा जाता है, वह गलत है। सारा नेतृत्व गाँववालों के हाथ में आना चाहिए और यह सारा समझाने के लिए रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं को सामने आना चाहिए। लेकिन मैं पाता हूँ कि वे जंजीर में जकड़े हैं। उन्हें वह जंजीर मालूम नहीं होती है, क्योंकि वह लोहे की नहीं, सोने की है।

सबको जागृत करने के लिए यह यात्रा चल रही है। परमेश्वर की इच्छा रहेगी तो हम हाथ से, वाणी से, अपनी ताकत से तब तक जन-सेवा करते रहेंगे, जब तक हमारा शरीर टूट नहीं पड़ता है। अभी हमें किसी तरह की थकान महसूस नहीं होती है। हम परमेश्वर की प्रेरणा से ही घूम रहे हैं। यह ईश्वर का काम करने के लिए आप सब लोग आ जाइए।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

नरवाना (पंजाब) १७-४-'५९

दया और राहत नहीं, जड़-मूल से क्रान्ति करो

रामनवमी के दिन आज हम इस नरवाना ग्राम में आ पहुँचे हैं। यह दिन बड़ा पवित्र है और नरवाना नाम भी बहुत अच्छा है। हम लोग हर रोज शाम की प्रार्थना में स्थितप्रज्ञ के लक्षण बोलते हैं। आखिर स्थितप्रज्ञ ब्रह्म-निर्वाण में पहुँचता है। आप पहुँचे ही नहीं, बल्कि यहीं रहते भी हैं। मैंने सुबह ही कहा था कि इस गाँव का नाम निर्वाण हमें बहुत अच्छा लगा।

पंजाब में भाषा के झगड़े हैं, राजनैतिक पक्षों के झगड़े हैं, और दूसरे भी झगड़े हैं, लेकिन हम मानते हैं कि इन झगड़ों का सम्बन्ध पंजाब के हृदय से नहीं है। पंजाब का हृदय वेद, उपनिषद्, गीता, गुरु-ग्रन्थ और सन्तों की वाणी से बना है। उसे लेकर यहाँ जो व्यक्ति काम करेगा, वह लोगों के दिलों तक पहुँच सकेगा। लोगों के दिलों को आश्वस्त करने के लिए लोगों के पास पहुँचने की जरूरत है। हमें इस बात को पूरा समझ कर काम करने वाले निर्भय और निर्वैर सेवकों की जरूरत है।

हमारा आन्दोलन दया और राहत के लिए नहीं है

यह भूदान और ग्रामदान का काम सामान्य भूतदया का काम नहीं है। याने दुनिया की हालत जैसी है, वैसी ही कायम रखकर लोगों को राहत पहुँचाने का काम नहीं है। लड़ाइयों को हम बंद नहीं कर सकते हैं, परन्तु उसमें जो जख्मी होते हैं, उनकी सेवा की योजना अच्छी है, लेकिन उससे लड़ाई बन्द नहीं हो सकती। लड़ाई को बन्द करना शांतिमय क्रांति का काम होता है। हम वर्तमान की समाज-रचना में क्रांतिकारक फर्क करना चाहते हैं। आज की हालत कायम न रहे, यही हमारी कोशिश है।

नानक ने कहा है कि धर्म दया का पुत्र है, दया माता है। माता ही नहीं रहेगी, तो पुत्र कहाँ से आयगा? इसलिए दया की आवश्यकता है। समाज में दया होनी चाहिए। लेकिन केवल दया से भी समाज का काम नहीं होगा। समाज के धारण और रक्षण के लिए धर्म की जरूरत है। सिपाही की सेवा ही नहीं करनी है, लड़ाइयाँ बन्द करनी हैं। लड़ाइयाँ जड़-मूल से कैसे टूटें, यही हमें देखना है और उसी के अनुरूप दुनिया को बचानेवाला कार्यक्रम बनाना है। हम बीमार ही न पड़ें, हरएक को उत्तम आरोग्य प्राप्त हो, सबको खाना-पीना अच्छी तरह से मिले, यह हमें देखना होगा। यह पहला चिन्तन होगा। फिर दूसरा चिन्तन मनुष्य बीमार पड़ते हैं तो सेवा करके उनका दुःख दूर करने की जरूरत रहती है। यह दया का काम गैरजरूरी नहीं है, लेकिन वह बुनियादी फर्क करनेवाला नहीं है। बीमार की सेवा करें, लेकिन मुख्यतः बीमारी का उन्मूलन करने की योजना करनी होगी। इस तरह दुःख को जड़-मूल से उखाड़ेंगे, तभी हमारा काम होगा। इस काम से हम आध्यात्मिक क्रान्ति लाने की कोशिश कर रहे हैं।

सर्वोदय और विज्ञान

आज एक भाई पूछ रहे थे कि आप साइन्स चाहते हैं या नहीं? मैंने कहा कि साइन्स पर सबसे ज्यादा अगर किसी का हक है तो मेरा हक है, याने सर्वोदयवालों का हक है, जो अहिंसा में श्रद्धा रखते हैं। दूसरे के हाथ में साइन्स गया तो मनुष्य जाति का ही खात्मा होगा। हम साइन्स जरूर चाहते हैं, लेकिन हम यह नहीं चाहते कि साइन्स बढ़े तो डाक्टर भी बढ़ें। आज प्लैनिंग में यह सोचा जा रहा है कि हजार मनुष्य के लिए एक डाक्टर हो तो देश बड़ा सुखी होगा। लेकिन डाक्टरों की संख्या बढ़े, यह विज्ञान के लिए शोभादायक नहीं है। डाक्टर की जरूरत नहीं पड़े, हर कोई आरोग्यवान हो। हम आरोग्य के नियम समझकर बरतें, तभी डाक्टर का धंदा जरा कम होगा। इसी को विज्ञान कहते हैं। आध्यात्मिक क्रान्ति किये बिना समाज का काम नहीं होनेवाला है। इस समाज की बुनियाद कायम रख कर थोड़ा-थोड़ा मकान दुरुस्त करना नहीं है। इसी नयी बुनियाद पर नया मकान खड़े करने का काम है। इसलिए जमीन कितनी मिली, कितने ग्रामदान मिले, यह सोचने का ढंग

ही गलत है। हम तो जमीन की मालकियत मिटाना चाहते हैं। यह बात हम समझा रहे हैं। इसी से अध्यात्मिक क्रान्ति होगी।

साधन और साध्य की क्रान्ति

बुनियादी मूल्यों को बदल कर नये मूल्य लाने का अर्थ है—जड़-मूल से क्रान्ति। साधनों में भी क्रान्ति, साध्य में भी क्रान्ति। तलवार हाथ में लेकर क्रान्ति नहीं करनी है। तलवार से क्रान्ति दूसरे देश में हुई, उसका नतीजा भी हमने देखा है। तलवार ने कोई ऐसी कसम नहीं खायी है कि सज्जनों के हाथ में ही रहूंगी, वह दुर्जनों के हाथों में भी जा सकती है। तलवार के हाथ में आ जाने से रास्ता बदल जाता है। साधन गलत हो जाते हैं। जिन-जिन लोगों ने तलवार के जोर से क्रान्ति की, उन्होंने साधनों में क्रान्ति नहीं मानी। साध्य और साधन हम दोनों में क्रान्ति चाहते हैं। मकसद में भी क्रान्ति चाहते हैं। और हासिल करने के जरिये में भी क्रान्ति चाहते हैं। इस क्रान्ति को समझे हुए और उसमें अपना जीवन सर्वस्व लगानेवाले कितने लोग होंगे, यही सवाल है। इसलिए पंजाब से मेरी माँग है कि तीन हजार सेवक पंजाब मुझे दे। पांच हजार की संख्या के लिए एक सेवक, ऐसा मेरा हिसाब है। वह सेवक उन पांच हजारों के जीवन में तन्मय, ओतप्रोत होनेवाला होगा। ऐसे तीन हजार सेवक और उन सबका इन्तजाम, योगक्षेम का इन्तजाम हम कर सकते हैं ऐसा अगर होगा, तो यहाँ ब्रह्मविद्या के आधार पर एक आध्यात्मिक क्रान्ति हो सकती है।

बुद्धि स्थिर हो

आज एक भाई के साथ चर्चा चल रही थी। वे कह रहे थे कि अब हमारे मन में कोई शंका नहीं रही। इससे हमारी पूरी सहानुभूति इस काम के साथ रहेगी। हम ज्यादा समय इस काम में नहीं दे सकते हैं। घर में और दूसरे कामों में हमारा समय देना पड़ता है। तो मैंने उनको कहा कि इतना आप समझ लीजिये कि क्रांति फुरसत से नहीं होती। अपना जीवन पूरा लगाने वाले, जान की बाजी लगाने वाले सेवक ही क्रान्ति ला सकते हैं। जब मैं इन्कलाब कहता हूँ, तब डरना नहीं चाहिए। खूनी क्रान्ति नहीं चाहता हूँ। पंजाब में मैं हर मनुष्य में जोश उनमें देखता हूँ। देखिये, बच्चे कितने जोर से बोल रहे हैं। जो उत्साह और जोश उनमें देखता हूँ, वह बहुत ही अद्‌भुत है। इस उत्साह और जोश को हमें ब्रह्म-विद्या की पटरी पर लाना चाहिए। "वा गुरू की फतह" तब पंजाब का काम होगा। इसलिए अब यह करना होगा कि जितना उत्साह और जोश है, जितनी एनर्जी है, उसका ठीक उपयोग हो, गलत उपयोग न हो। जिसके दिमाग में क्रोध नहीं आता वह शख्स क्या काम करेगा? मैं कहता हूँ कि क्रोध को मन में अगर रोक सकते हो, तो अच्छा होगा। जिसमें क्रोध ही नहीं है, तो वह शख्स वीर्यहीन होगा। इसलिए क्रोध हो, परन्तु उसे मन में रोकना चाहिए। जैसे भाप को हम रोकते हैं, तो एंजिन बहुत जोर से दौड़ता है। भाप को खोल देंगे, तो उससे शक्ति पैदा नहीं होगी, सारी भाप हवा में चली गयी तो शक्ति निर्माण नहीं होगी। वैसे ही क्रोध को खोल दिया तो काम नहीं होगा। अभी मैं स्थितप्रज्ञ को छोड़ देता हूँ। उसकी एक अलग अवस्था है। मैं बहुत से दयालु लोग देखता हूँ, उनका लक्षण यही है कि किसी का दुख देखते हैं, तो वे रो लेते हैं। याने उनकी भूतदया को 'आउट-लेट' मिल गया। रो लिया और धो लिया—करना-धरना कुछ है नहीं। जैसे भक्त का होता है, वह रो लेता है, तो बस, उसका काम हो गया। लेकिन ऐसे रोने से मनुष्य वीर्यहीन हो जाता है। काम नहीं कर सकता है। वैसे ही क्रोध भी प्रकट किया तो हम वीर्यहीन हो जायेंगे। हमें रोनेवाली दया नहीं चाहिए और उबलने वाला, खौलनेवाला क्रोध भी नहीं चाहिए। मनुष्य रो कर के ताकत गँवाता है, वैसे ही क्रोध भी प्रगट कर के ताकत गँवा देगा। इसलिए हम अगर क्रोध को रोकते हैं तो हमारी स्थिर बुद्धि होगी। इस स्थिर बुद्धि की आज अत्यन्त आवश्यकता है। दूसरी बात है प्राण-शक्ति की। यह प्राण-शक्ति मैं यहाँ बहुत देखता हूँ। यहाँ जो वायटेलिटी है, और उत्साह है, वह बड़ी काम की चीज है। देखिए, अब बच्चे आपस में लड़ रहे हैं। कितना जोश है उनमें। अब उनको मार्गदर्शन मिलना चाहिए। उससे एक शक्ति पैदा होगी।

मालिकी रहने वाली नहीं है

इस क्रान्ति का मूल ब्रह्म-विद्या है। ब्रह्म-विद्या याने हम हम सब एक है। यह एकता का भान होना ही ब्रह्म-विद्या है। यह भान हम लोगों को करायेंगे, तो यह जो जोश दिखता है, उसमें से ताकत प्रगट होगी। मैं कहना यह चाहता था कि हम एक नयी समाज-रचना बनाना चाहते हैं। "जब चाहो तब खोल किवरवा" पर आज ऐसी माँग करनेवाले लोग ही कम दीखते हैं। आज एक भाई ने कहा कि भू-दान का काम हमें आकर्षिक नहीं मालूम होता था, लेकिन ग्रामदान से हमारा उत्साह बढ़ा है। मैंने कहा, बड़ी मजे की बात है कि आपको भूदान मिलता है, तो उसका आकर्षण नहीं है और ग्रामदान नहीं मिलता है, तो उसका आकर्षण है। याने जो लड्डू नहीं मिल सकता है उसका आकर्षण है और जो रोटी मिल रही है, उसका आकर्षण नहीं है—तो आपका यह मरने का ही कार्यक्रम है। इसलिए जरा सोचिये कि यहाँ पंजाब में भूदान हो रहा है, जमीन मिल रही है, यह क्या कम अच्छा है? यह आरम्भ है। इसके आगे ग्रामदान होगा। अभी पंजाब में कक्का किक्की चल रहा है। परन्तु उसके सिवाय किताब पढ़ नहीं सकेंगे। इसलिए भूदान मिल रहा है तो आरम्भ हुआ है। मुझे भी ग्रामदान का आकर्षण बहुत है। लेकिन मैंने यह कब निकाला?—जब बिहार में बीस—बाईस लाख एकड़ जमीन मिली तब। जहाँ उद्‌गम ही नहीं है, वहाँ प्रवाह कैसे आयेगा? इसलिए भू-दान का आकर्षण नहीं है, तो भी करना होगा। जमीन की मालकियत हमें मिटानी है। उसके लिए यह आरम्भ हुआ है। मैं कहना यह चाहता हूँ कि हम लाख कोशिश करें, तो भी जमीन की मालकियत नहीं रहनेवाली है। जब जमीन बहुत ज्यादा थी, तब लोक-संख्या कम थी। लेकिन अब जैसे-जैसे ध्यान में आ रहा है कि जमीन का रकबा कम हो रहा है जनसंख्या बढ़ रहा है, तो हमारे सामने बुनियादी काम मालकी मिटाने का ही रह जाता है। ऐसे बुनियादी काम में अपना जीवन-सर्वस्व देनेवाले निश्चयी लोग चाहिए।

निर्भय, निर्वैर और निष्पक्ष बनें।

उनके लिए कौन से गुण होने चाहिए? 'निर्भो-निर्वैर' सिखों का मन्त्र है। नानक ने यह कहा था कि ये दो गुण हममें होने चाहिए। लेकिन ये भी काफी नहीं है। नानक के जमाने में पार्टी पालिटिक्स नहीं था। आज पार्टी-पालिटिक्स बहुत चलता है। और उसमें जाना और लड़ना कर्तव्य माना गया है। इसलिए निर्भय और निर्वैर के साथ हम 'निष्पक्ष' जोड़ना चाहते हैं। यह बात ठीक है कि जो निर्वैर और निर्भय हो गया, वह पक्ष में कैसे रहेगा? इसलिए निर्भय और निर्वैर होने के बाद निष्पक्ष होना मुश्किल बात नहीं है। लेकिन यह जोड़ना जरूरी

है। अभी लोग समझते नहीं है। क्योंकि उनके दिमाग ठंढे पड़े हैं। इसलिए समझाना पड़ता है कि भाई निर्भय और निर्वैर के साथ निष्पक्ष भी होना चाहिए। ५१ लोग मेरी सेवा चाहते हैं और ४९ नहीं चाहते हैं,तो भी मेरी सेवा उनपर लादूँगा अभी ऐसा चलता है। इसलिए जहाँ निर्भय और निर्वैर मनुष्य हो जाता है, वहाँ निष्पक्षता अपने आप आ जायगी। लेकिन कहना पड़ता है तो समझते हैं। आखिर हिन्दुस्तान में पक्षों में कितने मनुष्य हैं? कांग्रेस में करीब ६० लाख चार आने के मेंबर होंगे और दूसरी पार्टीयों में कुल मिलकर चालीस लाख मेंबर भी नहीं हैं और हिन्दुस्तान में ३६ करोड़ जनता है। लेकिन जनता में हिम्मत नहीं है कि हम सरकार-निरपेक्ष होकर काम करें।

सरकार और आप!

आखिर सरकार में जो ताकत है, वह तुम्हारी दी हुई है। कुआँ से बालटी भर पानी बाहर निकालें, तो बालटी भर पानी में शक्ति ज्यादा है कि कुएँ के पानी में? कुआँ आप है। इसलिए आपके पास शक्ति ज्यादा है। सरकार याने बालटी भर पानी है। आप ही सरकार को बनाने वाले हैं। परन्तु सरकार की निंदा और स्तुति करना यही हमने हमारा धंधा माना है और हम इतने लाचार, हताश, अनाथे बने बैठे हैं कि मानों हम कुछ नहीं कर सकते हैं। यह भावना ही अब बदलनी होगी। भूदान के काम से अब यह भावना बनी है कि लोकशक्ति से कुछ काम बन सकता है। बिना सरकार की मदद से चालीस लाख एकड़ जमीन मिल चुकी है, तो कुछ हो सकता है ऐसा विश्वास हो गया है। मैं चाहता हूं निर्भय, निर्वैर और निष्पक्ष ऐसे तीन हजार सेवक आप मुझे दीजिये और फिर मुझे कहिये। कि आप क्रान्ति करो। वैसे सेवक मिलने पर पंजाब में शांति-मय क्रान्ति होगी और उसका आधार ब्रह्म-विद्या होगा।

त्रिविध कार्यक्रम

ग्राम स्वराज्य, शांति-सैनिक और सर्वोदय-पात्र यह हमारा त्रिकोणात्मक कार्यक्रम है। सब जगह जाकर लोगों को हमें समझाना होगा। सर्वोदय-पात्र याने शांति के लिए लोक-सम्मति। जमीन की मालिकी मिटती है, तो ग्रामदान होगा और उसके नींव पर ग्राम-स्वराज्य खड़ा हो सकेगा। फिर उस स्वराज्य को अच्छा बनाने का कार्यक्रम लम्बा चलेगा। जैसे देश का स्वराज्य हमने प्राप्त किया और उसे अच्छा बनाने का कार्यक्रम लम्बा चल रहा है, वैसे ही ग्रामदान के बाद ग्राम-स्वराज्य का कार्यक्रम लम्बा चलेगा और उस ग्राम-स्वराज्य के लिए हमने यह कार्यक्रम रखा है।

◆◆◆

स्वागत-समिति

जहाजपुर (भीलवाड़ा) १८-२-'५९

आजादी की रक्षा के लिए शान्ति-सेना में सम्मिलित होइये

मेवाड़ वीरों की भूमि है। यहाँ बहुत काम हो सकता है। यहाँ के वीरों के दर्शन से हमें बहुत खुशी होती है। आज हमारा यह आखिरी पड़ाव है। सामने जो किला आपको दीख रहा है, ऐसे किलों का दर्शन यहाँ हमें बहुत हुआ है। ये किले सिर्फ मिट्टी के किले नहीं हैं। छाती के किले हैं। जिन्होंने ये बनाये थे, वे बहादुर थे। आजादी के रक्षा के लिए उन्होंने इनका निर्माण किया। इसलिए एक-एक किला गाँववालों का भूषण हो गया है। स्वराज्य की रक्षा का प्रतिनिधि—याने यह एक-एक किला! परन्तु यह पुराने जमाने की बात हो गयी है। इस जमाने में किले से रक्षण नहीं होगा। यह तो हाइड्रोजन और एटम बम का जमाना है, इसलिए इस जमाने में किलों को स्थान नहीं है।

हम यह कहते हैं कि गाँव-गाँव सारे एक हो जायँ और एक दिल हो जायँ, एक परिवार हो जाय, हरएक गाँव मजबूत किले जैसा बने, तब स्वराज्य का रक्षण होगा। ऐसे स्वराज्य की रक्षा के लिए हमने सेवकों की भी माँग की है। हम चाहते हैं कि हर गाँव से हमें एक-एक सेवक मिले, जो हमेशा सेवा करता रहे और वक्त आने पर कहीं अशांति हुई तो शान्ति करने में अपनी जान जोखिम में डालने के लिए तैयार रहे। इन शान्ति-सैनिकों के लिए सम्मति के तौर पर हर घर में सर्वोदय-पात्र की स्थापना की जाय और इस काम के लिए सबका दिल एक सूत्र में पिरोना चाहिए।

यह गाँव हमारे कार्यकर्ता का गाँव है। उसने शांति-सेना में अपना नाम दिया है। अब उसके पीछे और लोगों को भी आना चाहिए। हमारे कार्यकर्ता का गाँव याने हमारा ही गाँव कहा जायगा। इसलिए यहाँ लम्बा व्याख्यान देने की जरूरत नहीं है। आज का दिन देने का दिन है—ऐसा समझकर दिनभर काम कीजिये। हर घर में सर्वोदय-पात्र रखना ही है, ऐसा संकल्प कीजिये। जिसके पास जो है, वह उसका एक हिस्सा समाज के लिए दे। हर कोई दे। मानव के हृदय को प्रसन्नता तब होती है, जब वह देता है। देने में मानवता का दर्शन होता है। खाना-पीना तो जानवर भी करता है। उसे उसी में संतोष हो जाता है, लेकिन मानव के दिल की तसल्ली तब होती है, जब वह दूसरे के लिए कुछ-न-कुछ त्याग करता है। इस गाँव से हमें शांति-सैनिक मिला है, तो और भी ऐसे सेवक हमें मिल सकते हैं। ऐसे शांति-सैनिक मिलेंगे तो सर्वोदय-पात्र के जरिये उनके योगक्षेम का इन्तजाम होगा। ऐसे जवान लोग, जो कि जीवन-सर्वस्व इसमें लगाना चाहते हैं, इसमें आ जायँ, यही हमारी अपील है।

◆◆◆

अनुक्रम

१. उठो, जागो और काम में लगो
तिरेडी २६ अप्रैल '५९ पृष्ठ ३८१
२. मेरा जन्म मालकी मिटाने के लिए ही हुआ है.
मोहसिया २० अप्रैल '५९ „ ३८२
३. राजनीति से लोकनीति को भंग न करें.
जहाजपुर १८ फरवरी '५९ „ ३८४
४. दया और राहत नहीं, जड़मूल से क्रान्ति करो.
नरवाना १७ अप्रैल '५९ „ ३८६
५. आजादी की रक्षा के लिए शान्ति-सेना में...
जहाजपुर १८ फरवरी '५९ „ २८७

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता : गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१
तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी।